3. खेल-खेल में

बच्चे सभी से प्यार करते हैं। विशेष रूप से उन्हें अपने खिलौने बहुत प्यारे होते हैं। हमें अपने खिलौनों से सब के साथ मिल-जुलकर खेलना चाहिए।

वर्ग-पहेली में से खिलौनों के नाम ढूँढ़ो और उन शब्दों के स्टीकर चिपकाओ–

गु	ड़ि	या	जो
ब	गें	द	क
ल्ला	प्र	का	र
रे	ल	गा	ड़ी

1. ☐ 2. ☐ 3. ☐

4. ☐ 5. ☐ 6. ☐

पात्र

चिंकू

मीनू

मम्मी

पापा

पहला दृश्य

(चिंकू के पापा बेंगलुरु गए, तो मीनू के लिए दो चोटी वाली गुड़िया और चिंकू के लिए उड़ने वाला हवाई जहाज़ लाए।)

मीनू : (खुश होकर) वाह! पापा, यह दो चोटी वाली गुड़िया तो बहुत अच्छी है।

पापा : (खुश होकर) ज़रा इसके पेट पर लगे बटन को दबाओ, फिर देखना कैसे ताली बजाकर नाचेगी।

मीनू : हाँ पापा, यह तो खूब तालियाँ बजाती है और लो नाचने भी लगी। अहा-अहा! (गुड़िया पाकर मीनू फूली न समाई)

चिंकू : (जोश में आकर) हाँ, पापा, और मेरे लिए भी आप बड़ा कमाल का उपहार लाए हैं। अब मैं अपना हवाई जहाज़ पड़ोस वाले अन्नू को दिखाऊँगा। जब देखो, अपनी रेलगाड़ी का घमंड दिखाता है। हमेशा यही शेखी बघारता है कि मेरे अंकल जापान से लाए थे। अच्छा पापा, आप जो जहाज़ लाए हो, वह किस देश का है?

पापा : (हँसते हुए) बेटा, यह हवाई जहाज़ और गुड़िया तो अपने भारत के हैं।

चिंकू : देखो पापा, भारत के हैं, पर कितने अच्छे हैं।

पापा : और क्या, अपना भारत किसी से पीछे नहीं है। हमें अपने देश में बनी चीज़ों पर गर्व करना चाहिए।

मम्मी : चलो, पापा थके हुए आए हैं, अब उन्हें आराम करने दो।

दूसरा दृश्य

(चिंकू और मीनू दोनों अपने-अपने खिलौनों से खेल रहे हैं और खूब बढ़-चढ़कर उनकी तारीफ़ भी कर रहे हैं।)

मीनू : (गुड़िया को गोदी में लेकर खिलाती हुई) अहा! कितनी प्यारी है मेरी यह दो चोटी वाली गुड़िया और भई, मैंने तो मम्मी से कहकर अपनी गुड़िया के लिए बड़े सुंदर कपड़े बनवाए हैं।

चिंकू : (दोनों हाथ हवा में लहराकर) और मेरे पास जानती हो, क्या है? दुनिया का सबसे अच्छा नीला हवाई जहाज़, जो बटन दबाने पर ऊपर हवा में उड़ता है। मुझे यह बिलकुल सचमुच का हवाई जहाज़ जैसा लगता है।

मीनू : (हँसते हुए) पर मुझे तो तेरा हवाई जहाज़ कुछ खास नहीं लगा।

चिंकू : नहीं-नहीं दीदी, आपने शायद मेरे हवाई जहाज़ के करतब अभी तक देखे नहीं हैं? यह तो आसमान में कलाबाज़ियाँ दिखाकर दुश्मनों के छक्के छुड़ाने वाला हवाई जहाज़ है।

मीनू : (हँसते हुए) अच्छा जी, लगता तो नहीं है।

(अब तो चिंकू और मीनू दीदी दोनों अपने-अपने खिलौनों की तारीफ़ का कोई मौका न छोड़ते।)

चिंकू : (गर्व से इठलाते हुए) मीनू दीदी, आपकी गुड़िया भी ठीक-ठाक है, पर मेरा हवाई जहाज़ ज़्यादा अच्छा है। देखो, कैसी कलाबाज़ियाँ दिखाता है! मुझे यह जादूगर लगता है। आसमान में शूँऽऽ... उड़ता है।

मीनू : पर चिंकू, अभी तुमने मेरी गुड़िया का घूमर नाच कहाँ देखा है!

चिंकू : (नहले पर दहला जड़ते हुए) पर मेरा हवाई जहाज़ तो दीदी, एक मिनट में हवा में दस चक्कर काटता है, दस चक्कर। कहो तो आपकी गुड़िया को भी हवा खिला लाए।

मीनू : (बुरी तरह नाक चढ़ाकर) क्या कहा तुमने? हवाई जहाज़? न जी न। मेरी गुड़िया को धरती अच्छी लगती है, इसीलिए तो इसने हरी चुनरी पहनी है। इसे हरियाली पसंद है।

चिंकू : मेरा हवाई जहाज़ नीला है, जैसे समंदर, आसमान, स्याही सबका रंग नीला है। (कुछ सोचकर) हाँ जी, अपने घर का पेंट भी नीला है।

मीनू : मेरी गुड़िया इंद्रधनुष की तरह रंग-बिरंगी है। तेरे हवाई जहाज़ से ज़्यादा सुंदर।

चिंकू : (गुस्से में आकर हवा में मुट्ठी तानकर) नहीं, नहीं, नहीं। मेरा हवाई जहाज़ ज़्यादा सुंदर, ज़्यादा सुंदर, ज़्यादा सुंदर है।
(बातें करते-करते दोनों झगड़ने लगते हैं।)

तीसरा दृश्य

(चिंकू और मीनू के खेल में दिनोंदिन बहस बढ़ती जा रही है।)

चिंकू : देखो, मान जाओ मीनू दीदी कि मेरा जहाज़ तुम्हारी गुड़िया से ज़्यादा अच्छा है...

मीनू : (आसमान की ओर उँगली उठाकर) कैसे मान जाऊँ? तेरा जहाज़ भला मेरी इतनी सुंदर-सी गुड़िया से अधिक सुंदर कैसे हो सकता है?

चिंकू : (गुस्से में) अच्छा, आपने मेरे जहाज़ को बेकार कहा? अब तो मैं आपकी इस बेकार-सी गुड़िया को एक दिन बाहर कूड़ेदान में फेंक आऊँगा।

मीनू : ज़रा फेंककर तो देख। मैं भी तेरे हवाई जहाज़ को गहरे समंदर में फेंक दूँगी।

चिंकू : (हार मानकर) सच्ची? नहीं दीदी, ऐसा मत करना। मेरा हवाई जहाज़ मुझे बहुत प्यारा है।

मीनू : और मेरी गुड़िया मुझे प्यारी नहीं है?

चिंकू : सो तो है, पर आप मेरे जहाज़ की बुराई मत किया करो, दीदी!

मीनू : तो तुम भी मेरी गुड़िया को बेकार मत कहना।

चिंकू : ठीक है, नहीं कहूँगा।

मीनू : तो ठीक है, मैं भी नहीं कहूँगी।

चौथा दृश्य

(फिर एक दिन चिंकू ने बड़े प्यार और मनुहार से मीनू की गुड़िया को हवाई सैर का न्योता दिया। बहुत देर तक गुड़िया हवाई जहाज़ में बैठकर घूमी। जब हवाई जहाज़ चक्कर काटकर गिरने लगा, तो मीनू की चीख निकल गई।)

मीनू : ओह! मेरी गुड़िया तो गई! (चिंकू ने झट से हाथ बढ़ाकर मीनू की गुड़िया लपक ली।)

चिंकू : (अपने जहाज़ को बड़े प्यार से डाँटते हुए) अरे पगले! ठीक से उड़ाया कर। अगर मीनू दीदी की गुड़िया नीचे गिर जाती, तो कौन मुझे अच्छा पायलट कहता? और फिर मीनू दीदी का गुस्सा तो जानते ही हो न! वे नाराज़ होती हैं, तो कितना चिल्लाती हैं...!

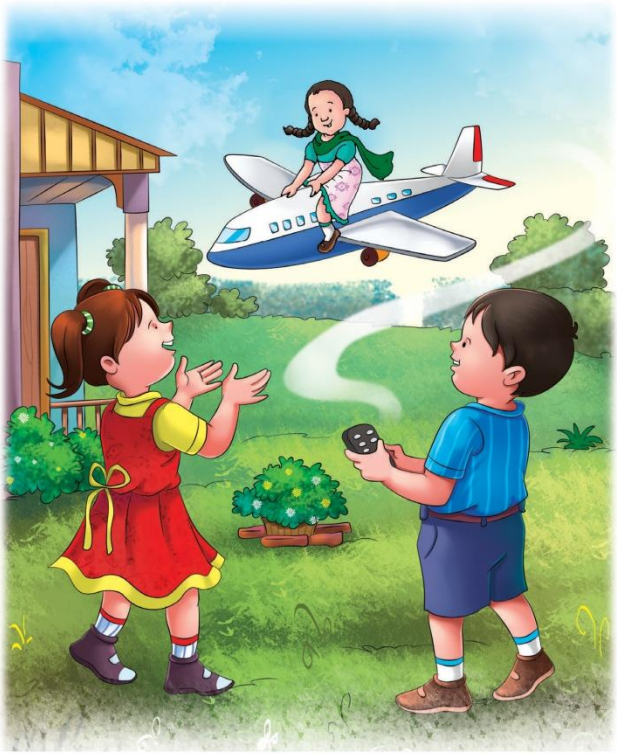

(अब दोनों हँसने लगे। मम्मी-पापा भी उन दोनों का प्यार भरा झगड़ा और खेल देखकर जोर से हँसने लगे।)

पापा : शरारती कहीं के।

मम्मी : यही तो खेल है इनका।

कठपुतली बनी लड़का

पठन हेतु

पिनॉक्यो एक कठपुतली की कहानी है, जिसे जिपैटो ने बनाया था। पिनॉक्यो अपनी लंबी नाक के लिए प्रसिद्ध है, जो उसके झूठ बोलने पर और लंबी हो जाती है। वह हमेशा एक सचमुच का लड़का बनना चाहता है। आओ पढ़कर जानें कि उसकी इच्छा कैसे पूरी हुई?

पिनॉक्यो बहुत शर्मिंदा था कि उसने अपने पिताजी को बहुत परेशान किया था। उसने अपने पिताजी से वादा किया था कि वह उनकी पूरी देखभाल करेगा, क्योंकि वे काफ़ी बीमार और कमज़ोर थे।

वैसे पिनॉक्यो एक कामचोर लड़का था, पर अपने पिताजी की देखभाल करने में उसने बहुत मेहनत की। उसकी देखभाल से उसके पिता जी जल्दी ही स्वस्थ हो गए।

कुछ दिनों बाद जब वह कपड़े लेने बाज़ार जा रहा था, तो रास्ते में उसे एक घोंघा मिला। पिनॉक्यो ने उससे दयालु परी के बारे में पूछा। घोंघे से यह जानकर उसे बहुत दुख हुआ कि परी बीमार है।

"ओह! अगर मेरे पास और रुपए होते, तो मैं और भी देता पर प्यारे घोंघे, अभी मेरे पास केवल दो शिलिंग हैं, जिनसे मैं अपने कपड़े लेने जा रहा था। अब तुम ये दो शिलिंग लो और दयालु परी को दे देना।", पिनॉक्यो ने दुखी होते हुए कहा। घोंघा पैसे लेकर चला गया। पिनॉक्यो भी वहाँ से घर चला आया। जब पिताजी ने उससे नए कपड़ों के बारे में पूछा, तो उसने कहा कि उसे बाज़ार में कोई कपड़ा पसंद ही नहीं आया।

उस दिन पिनॉक्यो रात दस बजे तक काम करने की बजाय आधी रात तक काम करता रहा। जहाँ वह प्रतिदिन आठ टोकरियाँ बनाता था, आज उसने सोलह टोकरियाँ बनाईं। उसके बाद वह सो गया।

सोते हुए उसने सपने में दयालु परी को देखा। वह मुसकराते हुए कह रही थी, "मैंने तुम्हारी पिछली सभी गलतियाँ माफ़ कर दीं। जो बच्चे अपने माता-पिता की सेवा करते हैं, वे हमेशा मेरा प्यार और तारीफ़ पाते हैं।"

जब सपना टूटा, तो उसकी नींद भी खुल गई। वह आश्चर्यचकित रह गया। अब वह कठपुतली नहीं था। वह सचमुच का लड़का बन चुका था। झोंपड़ी की बजाय

अब वह सुंदर घर के एक कमरे में था। उसके पलंग पर उसके लिए एक सुंदर सूट और टोपी रखी थी। पलंग के पास उसके जूते रखे थे।

उसने वह सुंदर सूट और जूते पहने। जब उसने जेब में हाथ डाला, तो उसे एक पर्चा मिला, जिस पर लिखा था–"परी ने पिनॉक्यो के दो शिलिंग लौटा दिए। उसके परोपकारी स्वभाव के लिए उसका धन्यवाद।"

वह खुशी से दौड़ता हुआ अपने पिताजी के पास आया, जो काफ़ी खुश व स्वस्थ दिख रहे थे।

पिता जी ने कहा, "देखा पिनॉक्यो, जो बच्चे शरारतें छोड़कर अच्छे बन जाते हैं, उनसे उनका परिवार भी खुश रहने लगता है।"

"पर पिता जी पुराना पिनॉक्यो कहाँ गया?" उसने पूछा। "यह रहा कुरसी पर।", पिताजी ने कुरसी पर रखी कठपुतली दिखाते हुए कहा।

उसे देखकर पिनॉक्यो ने खुद से ही कहा, "जब मैं कठपुतली था, तब कितना बुरा था। अब सचमुच का एक लड़का बनकर मैं कितना खुश हो गया हूँ।"

साभार

पिनॉक्यो